Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

1857 ई. के आन्दोलन में सिंहभूम के नायक राजा अर्जुन सिंह कि भूमिका

आदित्य कुमार
यू.जी.सी नेट, एमफिल, पी.एच.डी
Email: adityawushu10@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180131
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 153-156
January - 2026
Submitted: 18 Dec. 2025
Revised: 28 Dec. 2025
Accepted: 13 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

सारांश

झारखण्ड के कोल्हान में शांति का साम्राज्य स्थापित होने तथा कप्तान सर थामत विलकिंसन की चलाई प्रशासनिक मानकी मुंडा व्यवस्था को फलीभूत होने के पहले ही सिंहभूम सिपाही विद्रोह की चपेट में आ गया। 1857 में क्रांतिकारी भूमिका निभाने वालो सिंहभूम के राजा अर्जुन सिंह की राजधानी चक्रधरपुर में थी। रांची एंव हजारीबाग में सिपाही फौजों की बगावत पर रामगढ़ बटालियन की टुकड़ी उन्हें दबाने के लिए भेजी गई, लेकिन ये भी विद्रोही हो गए। दुसरी ओर इन बागी फौजों के खिलाफ सरायकेला के राजा चक्रधर सिंह और खरसावां के राजा ठाकुर हरि सिंह ने अपने–अपने क्षेत्र की सीमाओं" में सैनिकों को रखकर चौकसी बढाही, ताकि थे बागी सिपाही उनके क्षेत्र में प्रवेश न कर जाए। बागी फौज ने चैनपुर गांव के बाबू के घर में डेरा जमाया, राजा अर्जुन सिंह ने उन्हें अपने पास नौकरी देने का प्रस्ताव दिया, फौजियो ने राजा के यहाँ नौकरी स्वीकार की और सरकारी खाजने से लूटे 20 हजार रूपए ठी बंदूकें भी राजा को सौंप दी। राजा अजून सिंह ने फौजियों की एक सफा की और बोले कि (सहका स्वामी ईश्वर है और सारे सिंहभूम में राज करने वाला राजा अजून सिंह है।

विशिष्ट शब्दः–*आत्मसमर्पण, पोराहाट, विद्रोहियों उद्दीषणा, पूर्ववर्ती*

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक संव वर्णानात्मक प्रकृति का है, शोध कार्य के लिए प्राथमिक एव द्वितीयक स्त्रोतो का उपयोग किया गया है, इसके लिए मुल्यता प्रकाशित ग्रंथ, पत्र–पत्रिकाओं, रिपोर्ट, में छपे विवरण, निबन्ध शेव लेख तथा विभिन्न शोध ग्रंथो को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

भूमिका

भले ही 1857 की ऐतिहासिक भारत की पृष्ठभूमि झारखण्ड में तैयार नहीं हुई थी परंतु भूमि के वीर सपूतों द्वारा मातृभूमि से प्रेम तथा अपने घरों से अंग्रेजी सरकार तक दिकुओं को मार भगाने की योजना उसी दिन से बना एव अमल करना शुरू कर दिया था। जब से अंगो ने अपने नापाक इराने से झारखण्ड की पावन धरती पर कदम रखा था 1857 की देशव्यापी क्रांति ने तो केवल उनकी वीरता प्रदर्शन को एक प्लेटफार्म प्रदान किया था।" वास्तव मे ब्रिटिश सरकार के शासन व्यवस्था में व्याप्त असंतोष ने ही झारखण्ड के जनजाति को 1857 की क्रान्ति में भागीनर बनने के लिए प्रेरित किया था। अग्रेजो द्वारा झारखण्ड को एक उपेक्षित भूमि के रूप में परिवर्तित कर दिया था। जिसके फलस्वरूप यहाँ पूर्व में कई विद्रोहियों के द्वारा अलग–अलग समयावधियों तथा अन्तरालो में भीषण आन्दोलन किए गये थे। जिसके फलस्वरूप यहां पूर्व में कई विद्रोहियो के द्वारा अलग–अलग समपनधियो तथा अन्तरालो मे भीषण आन्दोलन किए गये थे। तत्कीलक कारणो ने झारखण्ड को 1857 की क्रान्ति में शामिल होने के लिए मजबूर कर दिया था।[1]

ब्रिटिश सरकार के शासन व्यवस्था में व्याप्त असंतोष ने ही झारखण्ड के जनजाति को 1857 ई. की क्रान्ति में भागीदार बनने के लिए प्रेरित किया था। अग्रेजो द्वारा झारखण्ड को एक उपेक्षित भूमि के रूप में परिवर्तित कर दिया था। जिसके फलस्वरूप यहाँ पूर्व में कई विद्रोहियों के द्वारा अलग–अलग समयावधियो तथा अन्तरालो में भीषण आन्दोलन किए गये थे। जिसके फलस्वरूप यहां पूर्व में कई विद्रोहियो के द्वारा अलग – अलग समयवधियों तथा अन्तरालो में भीषण आन्दोलन किए गये थे। तत्कालिक कारणो ने झारखण्ड को 1857 की क्रान्ति में शामिल होने के लिए मजबूर कर दिया था।[2]

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
आदित्य कुमार, यू.जी.सी नेट, एमफिल, पी.एच.डी

How to cite this article:
कुमार, . आदित्य . (2026). 1857 ई. के आन्दोलन में सिंहभूम के नायक राजा अर्जुन सिंह कि भूमिका. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 153–156. https://doi.org/10.5281/zenodo.18618014

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18618014
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

इसके पहले हुए अनेको विद्रोह के परिणामस्वरूप प्रत्येक बार एक नयी शासन व्यवस्था को चाहे–अनचाहे ढंग से केवल आदिवासियों पर थोपी ही गयी जिसका कुछ खास उत्थान नहीं हुआ बल्कि उल्टा यह व्यवस्था जनजातियो के लिए एक नयी परेशानी का सबक ही बन जाता रहा। संक्षेप में पहि कहा जाए तो यह स्पष्ट होती है कि कम्पनी की शासन व्यवस्था झारखण्ड के आदिवासी जीवन को काफी समझ ही नहीं पाये। इनके प्रत्येक कार्य अपने स्वार्थ को आगे रखते हुए झारखण्ड के अहित के पक्ष में प्रेरित होती थी। अतः यह विद्रोह होना तो स्वभाविक ही था।[3] इसी प्रकार के परिस्थितियों में झारखण्ड के जनजातियों को 1857 के क्रांति में प्रवेश करने की प्रेरणा दी।

तथ्य विश्लेषण

जब छोटानागपुर में 1857–58 का ओलेलन शुरू हुआ तो सिंहकर्म क्षेत्र के असंतुष्ट लोगों ने अर्जुन सिंह को अपना स्वाभाविक नेता मानना शुरू कर दिया, वह सिंहभूम जिले के पोराहाट के निवासी थे और कोल लोगों पर उनका बहुत प्रभाव था और लोग उसे देवता के समान आदर" देते थे। वह बहुत विद्धान व्यक्ति था और न्याय करने के लिए भी प्रसिद्ध था। 13 अगस्त 1857 को लोगों ने एक उद्घोषणा किया कि "लोग भगवान के है, देश राजा का है और अर्जुन सिंह उसके शासक है यह सुनकर सरायकेला के राजा चक्रधर सिंह न्चाईबासा से भाग गए और उसे सिपाहियों के हायों छोड़ दिया, सिपाहियों ने तुरंत विद्रोह नही किया, क्योंकि वे अर्जुन सिंह से कुछ करवाई का इंजार कर रहे थे। लेकिन उनका रवैया ठंडा लग रहा था। यद्यपि वह हिचकत्या रहे थे, फिर भी उनके भाई बैजनाथ सिंह तथा जणू. रघुदेव और अन्य दरबारी उन पर विद्रोह में शामिल होने के लिए दबाव डाल रहे थे।

इसी बीच रांची में आंदोलन के नेता और ठाकुर विश्वनाथ सिंह और माधो सिंह जमादार सहित कुछ अन्य लोग स्थानीय सिपाहियों को विद्रोह के लिए उकसा रहे थे। इसलिए आखिरकार उसितंबर को उन्होने विद्रोह का झंडा बुलंद किया और खजाने पर कब्जा करने और जेल से दोषियों को रिहा करने के बाद रांची की ओर बढे। लेकिन 5 सितंबर को उन्हें उफनती हुई "सोगई नही (चाईबासा के पश्चिम में) के किनारे रोक दिया गया। 500 से 600 कोल के एक दल ने सिपाहियो पर आक्रमण कर दिया, जिन्होने उन्हें तब तक जाने नहीं दिया जब तक कि राजा अर्जुन सिंह का एक दूत खजाने के साथ उन लोगो 100 लोग) को राजा के मुख्यालय चक्रधरपुर नही ले गया, जहाँ उन्हें रखा गया था। बाद में हिरासत में लिया गया।[4]

वरिष्ठ सहायक आयुक्त लेफ्टिनेंट बर्च को पता चला कि कोलों ने भी अर्जुन सिंह से मिलने का फैसला किया है और उनमें से बड़ी संख्या में हथियारबंद लोग पोराहाट में उनके साथ शामिल होने के लिए जा रहे है। इसलिए बर्च ने सबसे पहले 16 सितंबर को चाम्बित (जिसे अके पूर्ववर्ती कैप्टन सिसमोर पहले ही छोड़ दिया था। पर फिर कब्जा कर लिया और अर्जुन सिंह के साथ सख्ती से निपटने का फैसला किया किया जो अभी भी अस्थिर मानसिक स्थिति में थे।

राजा ने बर्च को वफादारी के संदेश भेजे और चाईबासा में उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने की इच्छा व्यक्त की। लेकिन जब राजा बर्च से मिलने में विफल रहे तो 23 सितंबर को बचे ने उन्हें विद्रोही घोषित कर दिया और उन्हें पकड़ने के लिए एक हजार रूपये का इनाम रखा। इसके अलावा, उनकी संपति जब्त कर ली गई।[5]

इसके बाद अर्जुन सिंह ने कमिश्नर से मिलने के लिए रांची जाने का फैसला किया और 25 सितम्ब को बर्च को इस बारे में सूचित किया।[6] 11 अक्टूब को वह खजाने और सिपाहियों के साथ रांची पहुंचा, सभी कोल जो तीरंदाजो दात संरक्षित थे, और कैप्टन डेविस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, (जिन्हें उन्हें बंदी बनाने के लिए एक मजबूत बल के साथ भेज गया था। 100 विद्रोहिय को बंदी बनाकर, 100 हथियार काफी मात्रा में गोला–बबन और 19 हजार 5 सौ 78 आना की शशि प्राप्त किया। यह राशि उन्होने विद्रोहियो से बरामद की थी।[7] उन्होने यह भी वादा किया कि उनके पास जो सोने और चांदी के आभूषण सरकार को सौंप देगे और सरकार को पाँच हजार नौ सौ छप्पन आने आठ पैसा का अतिरिक्त भुगतान करेगे 18 इसके बाद उन्हें तुरंत चाईबासा लौटने और मुकदमें के लिए लेफ्टिनेंट बर्च के सामने आत्मसमपर्ण करने के लिए कहा गया।[8] राजा वापस चलें गए, लेकिन उन्होने आंत्मसमपर्ण नहीं किया। ऐसा कहा जाता है कि उनके दीवान जग्गू ने उसे ऐसा अपमानजनक कदम न उठाने के लिए दबाव डाला। कारण यह था कि जग्गू गुप्त रूप से कोलो को एक बार फिर से विद्रोह करने के लिए उकसा रहा था। संभवता यही कारण था कि अर्जुन सिंह ने आत्मसमपर्ण नहीं किया और इसके बजाय उसने बर्च को अपनी वफादारी का परिचय दिया और अंग्रेजो को दिए गए अपने बचन को निभाने का वादा किया।[9]

छोटानागपुर के कमिश्नर डाल्टन को लग रहा था कि राजा अभी भी बफादार है।[10] लेकिन ब्रिटिश सरकार ने राजा आर्जुन सिंह ने ब्रिटिश अधिकारियों के सामने समर्पण न करने का आरोप लगाया और उन्हें चाईबासा में एक याचक के रूप में जाने का निर्देश दिया।" इस समय तक राजा अर्जुनसिंह बिटिश सरकार के प्रति वफादार थे।[11] विश्वनाथ शाही द्वारा भेजे गए लोगओ और संदेशों ने उन्हें विद्रोही मे शमिल होने के लिए अनुरोध किया था, लेकिन अब तक उन पर कोई असर नहीं हुआ था।

इसके तुरंत बाद एक दुखद घटना घटी जिसने अर्जुन सिंह के मन को बदलने में निर्णायक साबित हुई। उनका एकमात्र बच्चा जिससे वे बहुत जुड़े हुए थे भर गया। इसके साथ ही ब्रिटिश सरकार द्वारा उनकी बफादार सेवाओं के बदले में उनके साथ किए गए हुर्व्यवहार और देशभक्तो को उनके दुश्मनों के हाथो धोखा देने के पाप की भावना ने उन्हें अपनी भूर्खता का एहसास कराया और अब उन्होने विद्रोहियो के साथ खुलकर जुड़ने का फैसला किया। पोराहाट लौटने पर उन्होने चक्रधरपुर से अपनी महिलाओं को पोराहाट में भेज दिया और ब्रिटिश अधिकारियो को संदेश को सुने से इनकार कर दिया। जिनमे से एक ने उन्हें " साहिबो से कहने का निर्देश दिया कि वे लड़ने के लिए तैयार है।[12] अब उन्होने आगामी संघर्ष की तैयारी शुान कर दी। राजा के आदेश से तोप के गोले तैयार करने के लिए लोहारों को काम पर रखा गया।[13] इस बीच जग्गू ने राजा की अनुपस्थिति में वरिष्ठ सहायक आयुक्त द्वारा चक्रधरपुर में स्थापित पुलिस चौकी को हटा दिया। लेकिन इस घटना के तीन दिन बाद यानी २० अक्टूबर को, बर्च ने हमला कर दिया।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

चक्रधरपुर के शहर पर फिर से कब्जा कर लिया जग्गू दीवान को पकड़ लिया और उसे फांसी दे दी। (जग्गा द्रीकन और राजा के पिता अचेत सिंह पर 1831–1832 में कोल विद्रोहियों के साथ मिली भगत का आरोप लगाया गया है। अगले दिन उन्होने पोराहाट में राजा पर हमला किया, लेकिन कुछ प्रतिरोध के बाद राजा अपने आदमियों के साथ भाग निकलें। लेकिन अके महल और आस–पास के गांव को ब्रिटिश सैनिको ने लूट लिया और जला दिया।[14]

बदल लेने के लिए विद्रोहियों ने एक व्यक्ति की हत्या कर दी जो इस अभियान में बर्च का मार्गदर्शन करने और जासूस के रूप में काम कर रहा था। उन्होंने फेरा के ठाकुर के घर और पास के बाजार को भी तहस–नहस कर दिया और जला दिया, जिसने बर्च की मदद की थी, इसके बाद वे अयोध्या नामक गांव की ओर बहें। बैजनाथ सिंह के नेतृत्व में विद्रोहियों की संख्या लगभग 2000 थी।[15] सरायकेला राजा और कैप्टन हेल तथा वाशिंगटन के नेतृत्व में सिखों की सेना सहित एक दल को उनके विरुद्ध भेजा गया। इस वी को देख विद्रोही पीछे हटने लगों।[16] विद्रोही ने जंयतगढ़ पुलिस स्टेशन पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया, जो दक्षिणी कोल्हान में विद्रोह का संकेत था।[17]

अयोध्या पर हमला करने वाली ब्रिटिश सेना अका पीछा करने में असमर्थ थी। इसके परिणामस्वरूप दक्षिणा कोल्हान अब खुले दौर पर विद्रोह होने लगा और चाईबासा भी खतरे में था। दिसंबर 1857 के अंत में सिंहभूम की विभिन्न जनजातियों में व्यापक उत्साह व्याप्त था। विद्रोह के प्रति।[18] इसलिए 14 जनवरी 1858 को कोमश्नर डाल्टन और वरिष्ठ सहायक कमिश्नर बर्च ने कैप्टन हेल के नेतृत्व में सिख सेना के साथ मिलकर बाल्बारी नामक स्थान पर विद्रोहियों पर हमला किया। वापस लौटते समय वे मोगरा नदी के किनारे शत्रुतापूर्ण कोलो के एक दल से टकरा गए और उन्हें तितर–बितर कर दिया। उन्होंने गांव को भी नष्ट कर दिया और वापस लौट गए। वापस लौटते समय जब वे एक सूखे नाले के गहरे तल को पार कर रहे थे, तो उन्होने पाया कि वहाँ भीड़ उमड़ रही है, विद्रोहियों ने उन पर अचानक हमला कर दिया और तीरों से हमला किया, जिससे उनमें से हर कोई घायल हो गया। सिखों की कमान संभाल रहे कैप्टन हेल को चार चोटें आई, लेफ्टिनेंट बर्ष की बांह तीर से कह गई, लुशिंगटन और डॉ. हेस को भी मामूली चोटे आई। इसके बाद कोलो ने लगभग 7 मील तक पार्टी का पीछा किया, लेकिन उन्हें और अधिक नुकसान नहीं पहुंचा सके और पार्टी बिना किसी और हताहत के चाईबासा पहुंच गई।[19]

इसके बाद विद्रोहियों ने सरायकेला के राजा पर हमला किया, जिन्हें अंग्रेजो ने चक्रधरपुर में उन्ळ माचिस की तीलियो के साथ छोड़ दिया था। बाद में कोलों के खिलाफ भेजी गई ब्रिटिश सेना पर अर्जुन सिंह की पार्टी ने हमला किया और उसे भारी नुकसान उठना पड़ा।[20] सिंहभूस मी दूसरी बार ब्रिटिश सरकार के खिलाफ खुलेआम खड़ा था, ब्रिटिश सरकार कुछ समय के लिए पूरी तरह से उखड़ गई थी। इसके तुरंत बाद 17 जनवरी 1858 को शेखावाटी बटालियन और एक अन्य बटालियन ने हमला किया। कनल फोस्टर के नेतृत्व में 100 यूरोपीय सैनिको का एक दल चाईबासा पहुंचा। पोराहाट के विद्रोही तितर–बितर हो गए, रैयतों ने आत्मसमर्पण कर दिया, और विद्रोही सहारो ने पहाड़ियों में कब्जा कर लिया। कोल ने भी आत्मसमर्पण कर दिया। इस सेना ने अर्जुन सिंह के गढ़ चक्रधरपुर को नष्ट कर दिया और उनके करीबी अनुयायियों, कोल हा गया, अर्जुन सिंह और कोल अभी भी सरकार के प्रति अपनी दुश्मकी में डहे हुए थे।

मार्च और जुन 1958 के बीच उनके और ब्रिटिश सेना के बीच कई मुठभेड़ हुई जिसके बाद विद्रोहियों को सिंहभूम के पहाड़ी हो में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। यूरोपीय सैनिक चक्रधरपुर में तैनात थे और 26 मार्च 1858 तक सब कुछ शांत रहा, जब बैजनाथ सिंह के नेतृत्व में लगभग २००० लोगों की सेना ने क जगह पर हमला किया। लेकिन विद्रोहियों को खदेड़ दिया गया।[21] फिर भी अशति जारी रही। इसके बाद विद्रोही सेनाएं जुमरू (चक्रधरपुर से चार मील पश्चिम) में एकका हुई और राजा अर्जुन सिंह के आदेश पर 10 जून को चक्रधरपुर वापस लौट गई,[22] रघुदेव के नेतृत्व में बड़ी संख्या में हथियारबंद कोल ने चक्रधरपुर को घेर लिया। इस हमले में छह यूरोपीय भारे गए हालंकि विद्रोहियों को खदेड़ दिया गया।[23]

इस घटना के बाद विद्रोही पोरहाट चले गए। वहां उन्होने अगले जुलाई तक पुरे कोल्हान क्षेत्र में अपना प्रभाव जारी रखा। जब छोटानागपुर के कमिश्नर के अधीन काम करने वाली सेना ने लगतार लड़ाई के बाद उन्हें पहाड़ियों में पीछे हटने के लिए मजबूर कर दिया। हालंकि ब्रिटिश सैनिका उनका पीछ नहीं कर सके, जिसके परिणामस्वरूप विद्रोही नवंबर 1858 तक निधि बने रहें। इस अवधि के दौरान वे कभी–कभार घुसपैठ करते रहे और रात में हमले करके और अन्य धापमार रणनीति का उपयोग करके ब्रिटिश सैनिको को परेशान करते रहे। नवंबर के महीने में बैजनाथ सिंह और रघु के नेतृत्व वाली एक सेना में आंनद्रपुर पर हमला किया और उस जगह के जमींदार को खदेड़ दिया जो सिंहभूम में ब्रिटिश सरकार का समर्थक था। बैजनाथ सिंह और रघुदेव इन सभी दिनों में अर्जुन सिंह से जनवरी तक अलग रहे 29 जनवरी को लेफ्टिनेंट बर्च के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना ने कोर्डिन (इस अवधि के दौरान राजा अर्जुन सिंह का निवास) पर हमला किया और उस पर कब्जा कर लिया।[24] यहां उन्होंने विद्रोहियों से संबंधित बड़ी मात्रा में हथियार, गोला बाल्छ, नकदी और पत्र–व्यवहार जब्त कर लिया। लेकिन राजा और अके लोग बिना पकडे भाग निकले। उन्होंने आत्मसमर्पण कारने की कोई इच्छा नहीं दिखाई, हालेकि समय–सीमा समाप्त हो गई थी, अब कमिश्नर ने अर्जुन सिंह और उनके दल को पकड़ने के लिए एक्क और तरकीब अपनाई। उन्होने अर्जुन सिंह के ससुर, मंयूरभेज के राजा पर दबाव डाला कि वे उन्हें आत्मसमर्पण के लिए राजी करें। 25 यह तरकीब बहुत सफल रही। 10 फरवरी को कुछ विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया। इसके बाद राजा के भाई बैजनाथ सिंह को पकड़ लिया गया। 15 फरवरी, 1859 को राजा अपने ससुर के पास आए, जिन्होंने उन्हें कमिश्नर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। इस तरह सिंहभूम में विद्रोह को दबा दिया गया।[26] हालांकि रघु और शामकरण फरार रहें। वे सिंहभूम से आचे विद्रोहियों के एक दल के साथ मिलकर लूटपाट करते रहे।[27]

आत्मसमर्पण के बाद राजा अर्जुन सिंह और उनके भाई बैजनाथ सिंह पर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ युद्ध छेडने का मुकदमा चलाया गया। लेकिन उनकी जान बच गई(क्योकि राजा ने पहले ही हथियार सौप दिए थे। कैदियो को सरकार के हवाले कर दिया गया। उन्हें सिंहभूम से निर्वासित कर दिया गया और उनकी पूरी संपति जब्त कर ली गई। दिसंबर 1859 में अर्जुन को चार सौ रूपये प्रति माह पेंशन के साथ राज्य कैदी के रूप में बनाराम भेज दिया गया।[28] उन्होने अपना शेष जीवन राजनीतिक निर्वासित के रूप में बनारस में बिताया।[29]

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

निष्कर्ष

1857 से पहले के संक्षिप्त क्षेत्रीय जनसांख्यिकीय आंकडों और भारत की पहली 1871 की जनगणना की तुलना के आधार पर संभवतः 800000 भारतीय मारे गये थे और बहुत अधिक संभावना है, विद्रोह और अकाल और बीमारी की महामारी दोनों में इसके तत्काल परिणाम होगा। भारत में रहने वाले 40,000 अङ्ग्रेजो में लगभग 6000 मारे गए। इन संख्याओं में सारसखण्ड को वीर सपूतो की भी संख्या है।

आदिवासियों ने अपना संघर्ष जारी रखा। फलतः उनके हर विद्रोह के बाद अंग्रेजो ने समझौते किए, नए कानून बनाए और उन्हें छूट दी। जबकि राजा–राजकडे कुछ भी हासिल नहीं कर सके। दरअसल आदिवासी, जहाँ एका तरफ अंग्रेजो के विरुद्ध अग्रेजों और उनके दलालो ब महाजनों के खिलाफ भी मोर्चा ले रहे थे, 1857 का गदर वर्ग–शोषण के खिलाप्त नहीं था, ठीक से विपरीत यह युद्ध राजा– नवाबो द्वारा अपना राज पाने और पुरानी सोमती व्यवस्था लागू करने के लिए लडा गया था। आजादी की लडाई में आदिवासियो का योगदान किसी समुदाय से कम नहीं था।

चाईबासा के राजा अर्जुन सिंह ने चक्रधरपुर का कमान सम्भाला, साथ ही खरसांवों के ठाकुर जग्गू दीवान, प्रबरू मानकी. खती होती जैसे वीर जवानो ने अपनी खास भौजुदगी को दिखलाते हुए अंग्रेजो के छक्के छुड़ा दिये। अंग्रेजी सरकार ने भी माना था कि यदि यह समूचा विद्रोह एक संगठित तर्ज पर होता तो उन्हें सम्भालना बहुत मुश्किल होता और शायद आज जो हम 1947 को भारत की आजादी का दिवस मनाते है वह मंजर 1857 में ही तय हो गया होता।

संदर्भ सूची

1. छोटानागपुर के कमिश्नर डाल्टन का बंगाल सरकार को पत्रा, किांक 26 जून 1861, राज्य अभिलेख कार्यालय, पटना,
2. दत्ता, के. के. विहार में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अशांति, 1831–1859, ५० 68–67
3. वही प्र. 67
4. वही पृ. 67
5. 5 वही पृ. 68
6. अर्जुन सिंह अजर्जी दिनांक 21 असिन, 1265 थै., राज्य केन्द्रीय अफिलेत्व कार्यलय पटना
7. कमिश्नर की रिपोर्ट दिनांक 30 सितम्बर 1859, राज्य केन्द्रीय अभिलेख कार्यलय पहना.
8. होम पब्लिक कॉसूलेखन दिनाक 8 जनवरी 1858 सख्या 145, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखगार नई दिल्ली,
9. जिला गजेटियर, सिंहभूम, सरायकेला एव खरसावा, 39.
10. कमिश्नर की रिर्पोट दिनांक 30 सितम्बर 1859, राज्य केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय पटना,
11. वही
12. छोटानागपुर को आयुक्त का बंगाल सरकार के सचिव को पत्र, दिनांक 30 सितम्बर, 1859, राज्य केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय, पटना,
13. वरिष्ठ सहायक आयुक्त, सिंहभूम के समक्ष गंगाधार का बथाना, दिनांक 21 मार्च 1849, राज्य केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय, पटना,
14. दत्ता, अनरेस्ट अग्रेस्ट ब्रिटिश, पृ. 70
15. वही ५०–70–71
16. ई. जे. सैलिडे का कार्यव्रत, दिनांक उसितम्बर 1858, राज्य केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय पहना',
17. छोटानागपुर के आयुक्त का बंगाल सरकार को पत्र दिनांक 23 जुलाई 1859, राज्य केन्द्रीय अभिलेख कार्यालय, पहना,
18. जिला गजेटियर सिंहभूम सरायकेल एव खरसोवा, पृ. 39,
19. हन्ता अनरेस्ट अग्रेस्ट ब्रिटिश पृ. –71–72
20. बंगाल न्यायिक विभाग की कार्यवाही दिनांक 27 पुनक्टूबर 1859. संख्या 167, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखाग नई दिल्ली।
21. वही
22. दिनांक 28जी अगस्त 1858 को वरिष्ठ सहायक आयुक्त के समक्ष साश्री ग्रीधर महतो का बयान, 16जी श्रनदम 1858.
23. दन्ता अनेरस्ट अगेस्ट ब्रिटिश पु. 73.
24. वही. पृ० 73–74
25. उपरोक प्र. 74
26. जिला गाजेटियर, सिंहभूम ५. ५०–५२,
27. बंगाल न्यायपालिका विभाग, अगस्त, 1861 की कार्यवाही (संख्या २२५–३०), भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखगार, नई दिल्ली
28. दन्ता, फ्रिडम मुण्मेट इन बिहार, वल्यू –1 प्र०–64.
29. छत्ता अनेस्ट अग्रेष्ट ब्रिटिश पृ. 76.